विषय – भक्ति आंन्दोलन पुनरावलोकन

बी० ए०,
पार्ट I

डा० कविता कुमारी सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)
आर० एन० कॉलेज, हाजीपुर

भारत के मध्यकालीन इतिहास में भक्ति-आंदोलन सबसे अधिक महत्वपूर्ण घटना है और यह उपर्युक्त परिस्थितियों की उपज है । भक्ति के जवीन-दर्शन के रूप में प्रतिष्ठित होने से पूर्व प्रायः सम्पूर्ण भारत पर वज्रयानी बौद्ध, सिद्ध एवं नाथ पंथियों का प्रभाव था । उन्होंने अपनी चमत्कारपूर्ण सिद्धियों एवं सहयोग की साधनाओं से भारत की साधारण जनता को आश्चर्य चकित कर रखा था । भारतीय जनता के हृदय में अपने धर्म और संस्कृति पर अटल विश्वास था । जब कभी भारत में वास्तविक पुनरूत्थान का युग आया तब इस विश्वास ने ही सहारा दिया । आध्यात्मिक्ता और लौकिकता एवं निश्रेयस और अभ्युदय को सामरस्य पर टिका हुआ जीवन संतुलित आदर्श वैदिक संस्कृति और धर्म में ही मिल सकता है, यह विश्वास तत्कालीन भारतीय जनता में था । न सिद्धों और न नागपंथियों के पास जीवन का कोई व्यापक मान मूल्य का और न इस्लाम के पास ही जो वैदिक संस्कृति और धर्म का स्थान ले पाता । उनके पास विध्वसंक तत्व अधिक थे और निर्माणक कम । जीवन का यह निर्णयक आधार केवल भक्त से ही मिल सकता था बात कवियों ने अनुभव कर ली थी, उसी का परिणाम भक्ति-आन्दोलन है ।

भक्ति - आन्दोलन में मध्ययुगीन जीवन में आमूल क्रांति आ गई । उससे पूर्व जन-जीवन का कोई बहुत उच्च आदर्श नही था । राजा-महाराजाओं के गुणगान और लौकिक वासनाओं का जीवन था । ऊँच-नीच की भावना और वैमनस्य से जीवन ग्रस्त और विश्रृंखल था । इस आन्दोलन ने राजाओं को हटाकर जीवन के केन्द्र बिन्दु पर भगवान की प्रतिष्ठा कर दी । जीवन के सब कार्य, सब भाव भगवान से संबंधि

होकर भक्ति बन गये । इससे जीवन में समता की भावना जग गई । वर्ण-व्यवस्था तो बनी रही पर वास्तविक घृणा और वैमनस्य की भाव नहीं रहा । जीवन मे जो आध्यात्मिता और ऐहिकता का अन्तर था वह समाप्त हो गया । भक्ति ने उन दोनों में पूरा सामंजस्य स्थपित कर दिया । जीवन में पुनः दार्शनिक और धार्मिक भावना जग गई ।

बौद्ध धर्म के ह्रास के बाद शंकराचार्य ने वैदिक धर्म की पुनः स्थापना की और अद्धैतमत का प्रचार किया । सैद्धान्तिक दृष्टि से अद्वैत में संकीर्णता का अभाव और समाज की एकता के सुत्र में बांध देने की शक्ति है, किन्तु व्यवहारि दृष्टि से वह सफल न हो सका । अद्वैतों का आधार मानकर दक्षिण के चार मतों की स्थापना हुई - रामनुजाचार्य का विशीष्टताद्वैत मत, निम्बार्क का द्धैताद्वेत मत, विष्णुस्वामी का शुद्धद्वैत मत और माधवाचार्य का द्वैत मत । इन्ही चार आचार्यो से प्रेरणा ग्रहण कर उत्तर भारत में रामानन्द चैतन्य वल्लभाचार्य ने वैष्णव मत का प्रचार कर भक्ति आन्दोलन को जन्म दिया ।

मध्यकाल की परिस्थितियों में रागात्मक तत्व की साधना ही जन-जीवन को आश्रय दे सकती थी । इससे प्रचीन सगुणोपासना तो पुनर्नीति हुई ही, उसके साथ ही मुसलमानों के आगमन से एक सामान्य भक्ति की भी प्रतिष्ठा हुई । नाथपंथी अन्तः साधक में कबीर ने प्रेमतत्व का मिश्रण कर दिया । कबीर ने वेदान्त का आसरा लेक निराकार ईश्वर की ज्ञान ओर प्रेम पर आधारित उपासना शुरू कर दी और प्रका निर्गुण पंथ की प्रतिष्ठा हुई ।

भक्ति मुलतः परम प्रति रूप में है । अतः भक्ति के उपर्युक्त सभी रूपों में प्र ही है, पर इस प्रेम के भी भिन्न-भिन्न रूप हैं । ज्ञानर्मार्ग भक्त अद्वैत का रागात्म अनुभव करता है । यहाँ भक्ति आर आत्मानुसंधान है । प्रेम मार्गीय में आरो ाम्पत्य भाव से अद्धैत स्थापित करने वाले प्रेम की अनुभूति है । रामभक्ति में अश ाव से जनित प्रेम है । कृष्ण भक्ति लीला के लिए कल्पित द्वैत से वास्तविक

के प्रेम से आप्लावित है । ज्ञानी जीव भगवान को ज्ञान से आत्म समर्पण है
प्रेमभागी का अतिशाय प्रेम से । रामभक्त सेव्य-सेवक भाव से भगवान को
होकर उसी में तगाकर हो गया है ।

आज हम 21वीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं । हमारा समाज, हम
हमारी आवश्यकताएँ और मूल्यों में परिवर्त्तन हुआ है । हमारी जीवन दृ
सौंदर्य बोध, हमारा अर्थतंत्र सभी कुछ बदल रहा है । तेजी से बढ़ते हु
संस्कृति के रूझान से एक बहुत बड़े वर्ग में भारतीय संस्कृति को महज स
वस्तु समझने की प्रवृत्ति बढ़ रही है । निःसंदेह पिछले दो दशकों में
रिवर्तित हुआ है । ऐसे कठिन समय में साहित्यकारों का दायित्व बढ
ाहित्य का पुनरावलोकन की आवश्यकता है । आज हम भक्ति साहि
ौर पुनरावलोकन की बात करते है तो हमं यह ध्यान रखना होगा कि
पर उठें । एकांगी रूचिबोध ओर दूराग्रह के बोझ से मुक्त होकर स
भक्ति साहित्य की वस्तुमुखी रूप की रचना करें ।